

Living the Lotus

8

2023

VOL. 215

Buddhism in Everyday Life



Rissho kosei-kai of Sri Lanka
Celebrates the 25th Anniversary

Living the Lotus Vol. 214 (July 2023)

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Sachi Mikawa
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124 FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

मन की शांति के साथ जीना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



यह सुनिश्चित करना है कि सभी देश विनाश से सुरक्षित रहेंगे

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, “स्वास्थ्य”, “पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण है, केवल बीमारी या दुर्बलता से निजात पाना नहीं है,” यह खुशी की परिभाषा को दर्शाता है।

हालाँकि, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि जब हम वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों पर विचार करते हैं - जैसे कि रूस का यूक्रेन पर आक्रमण; सीरिया, सूडान, म्यांमार और अन्य देशों में चल रहे गृहयुद्ध; विभिन्न क्षेत्रों में शरणार्थी और मानवाधिकार के मुद्दे और जापान की अपने पड़ोसी देशों के साथ जो विभिन्न समस्याएँ हैं, वे इस बात के प्रमाण हैं कि कोई सही मायने में स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में सक्षम नहीं हो पाता है। संसार भर में राजनीतिक वास्तविकता को सैन्य शक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है। देश अपनी सैन्य तैयारियों का विस्तार करके, अपनी सैन्य शक्ति को निवारक के रूप में उपयोग करके एक-दूसरे को नियंत्रण में रख रहे हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि जो देश और क्षेत्र पहली नज़र में शांतिपूर्ण प्रतीत होते हैं वे भी लगातार इन सैन्य तनावों के संपर्क में हैं।

हालाँकि, यह सिर्फ़ यूं ही शुरू नहीं हुआ। 1982 में, संस्थापक निवानो ने चेतावनी देते हुए कहा, “वर्तमान संकट की स्थिति में है, क्योंकि तृतीय विश्व युद्ध किसी भी क्षण छिड़ सकता है।” उन्होंने हमें यह भी बताया कि “सभी हथियार भय के मन से आते हैं। अविश्वास और दूसरे देश द्वारा आक्रमण का डर हथियारों की होड़ को बढ़ावा दे रहा है, जो उनके दुराग्रहपूर्ण अभियान के आग्रह से आता है, साथ ही छिपे रूप से अणु-शस्त्रों को प्रतिबंधित करने एवं भंयकर अस्त्र-शस्त्र की दौड़ कम करने का हस्ताक्षर अभियान भी चल रहा है।

जैसा कि कहा गया है, केवल हमारे अपने देशों पर किसी अन्य देश द्वारा आक्रमण और विनाश के बारे में सोचने से हमें बेचैनी महसूस होती है। इसके अलावा, अपने देश की रक्षा करना आपके स्वयं के जीवन और आपके परिवार के सदस्यों के जीवन की रक्षा करने की इच्छा का विस्तार है, इसलिए हम कह सकते हैं कि सशस्त्र प्रतिरोध पर निर्भर रहना मानव प्रवृत्ति का एक हिस्सा है। फिर भी, हम निश्चित रूप से यह नहीं कह

सकते कि किसी दूसरे देश के आक्रमण से डरना या शत्रुता और निंदा का मन रखना स्वस्थ है। इस अर्थ में, वास्तव में स्वस्थ और जीवंत जीवन जीने के लिए, हमें सैन्य विस्तार पर निर्भर हुए बिना अपने देशों की रक्षा करने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में, हमें यह सुनिश्चित करने के साधन खोजने और उन्हें साकार करने का प्रयास करना चाहिए कि सभी देश विनाश से सुरक्षित रहेंगे।

ठीक वैसे ही जैसे आप स्वयं से प्यार करते हैं

“अगस्त के महीने में - / छठा, नौवाँ, / और पंद्रहवाँ।” हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु बम विस्फोटों के दुःखद अत्याचारों और द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बारे में यह कविता, युद्ध के लिए पश्चाताप और दुःख और मृतकों की आत्माओं को सांत्वना देने की इच्छा से भरी है। युद्ध की समाप्ति के 68 वर्ष बाद भी, यह बात मुझे अभी भी गहराई तक प्रभावित करता है। इसलिए, मैं अपने हृदय की गहराई से यह आशा करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता कि यह संसार ऐसा हो जिसमें हर जगह सभी लोग वास्तव में मन की शांति के साथ रह सकें।

संस्थापक निवानो ने कहा, “युद्ध और संघर्ष स्वार्थ की भावना से उत्पन्न होते हैं। वे भेदभाव के मन से उत्पन्न होते हैं। वे घृणा और ईर्ष्या से उत्पन्न होते हैं। जब तक हम ऐसे कुरूप मन को दबाएँगे या कमजोर नहीं करेंगे, तब तक मानव जगत से संघर्ष गायब नहीं होगा।” और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि “धार्मिक आस्था के माध्यम से मानव मन को बदलना शांति की ओर महान, सीधा मार्ग है।” बौद्ध धर्म करुणा को सबसे बड़ा महत्व देता है, जबकि ईसाई धर्म इसे प्रेम पर रखता है, और निश्चित रूप से अन्य धार्मिक धर्मों में भी इसी तरह की शिक्षाएँ हैं। सद्भाव की ओर ले जाने वाली इन शिक्षाओं के अनुसार, सभी मनुष्यों को दूसरों के जीवन से प्यार और सम्मान करना चाहिए, जैसे वे अपने स्वयं के अपूरणीय जीवन से प्यार और सम्मान करते हैं। मेरा मानना है कि धार्मिक लोगों को ऐसे संसार के निर्माण का मिशन सौंपा गया है। उस उद्देश्य के लिए सहयोग और सहयोग के लक्ष्य ने शांति के लिए धर्मों को जन्म दिया।

(August 2023, Kosei)



कॉमिक्स के माध्यम से रिश्शो कोसेइ काइ का परिचय

शाक्यमुनि बुद्ध का जीवनकाल और बौद्ध धर्म की देशनाएँ

पाँच बौद्ध उपदेश

शाक्यमुनि उन शीलों को भी सिखाते हैं जिन्हें बौद्ध स्वेच्छा से अपने दैनिक जीवन में अपनाते हैं। पाँच शील विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं: हिंसा नहीं करना, चोरी नहीं करना, व्यभिचार नहीं करना, झूठ नहीं बोलना और नशा नहीं करना।

हिंसा नहीं करने का अर्थ है, अकारण प्राणियों की हत्या नहीं करना। इसमें बहुमूल्य संसाधनों को बर्बाद नहीं करना शामिल है। चोरी नहीं करना, चोरी को रोकता है। व्यभिचार नहीं करना, यौन दुराचार से दूर रहना है, झूठ नहीं बोलना में झूठ बोलने के साथ-साथ दुर्भावनापूर्ण बातें भी शामिल है। नशा नहीं करना, से आशय है कि मात्रा से अधिक नहीं पीना, खाना-पीना मात्रा से अधिक नहीं करना।



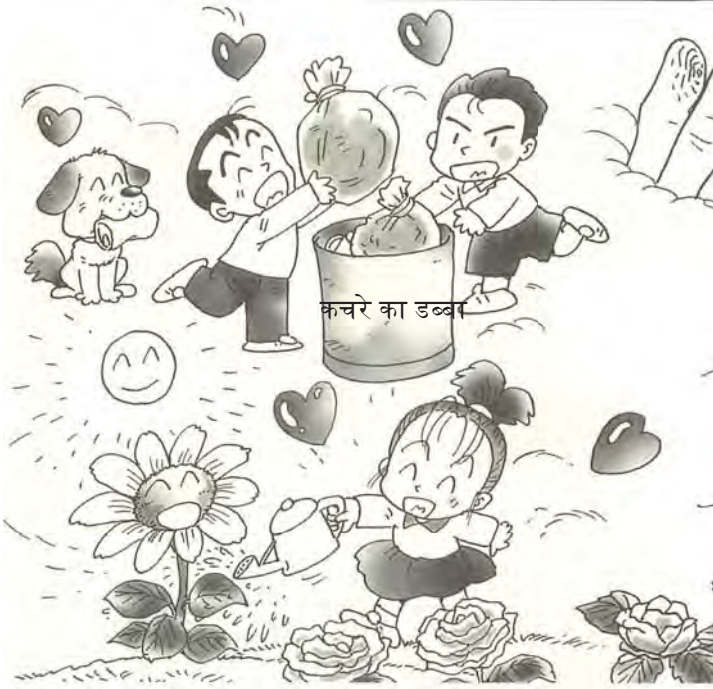
क्या तुम्हें पता है?

बौद्ध धर्म में, व्यक्तिगत रूप से विनियमित मामलों (जैसे कि नीतिशास्त्रीय एवं नैतिक शिक्षा) से संबंधित नियम, जिन्हें बौद्ध, निर्धारित और सामान्य दोनों, स्वेच्छा से पालन करने की प्रतिज्ञा करते हैं, उसे शील, (Jpn., kai) कहते हैं। दूसरी ओर, संगठनों द्वारा कानूनी मामलों के लिए बनाए और देखे गए नियमों को विनय (संस्कृत में) कहा जाता है।



कॉमिक्स के माध्यम से रिश्शो कोसेड़ काइ का परिचय

सभी बुद्ध के बच्चे हैं – पुण्डरीक सूत्र की देशनाएँ



बौद्ध धर्म में इतनी सारी शिक्षाएँ हैं कि उन्हें चौरासी हजार धर्म द्वार कहा जाता है। उपदेशों को दर्ज करने वाले सूत्रों की संख्या हजारों में है।

इन सभी में, पुण्डरीक सूत्र (सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र) बौद्ध महायान सूत्रों में सबसे अधिक पूजनीय रहा है और इसलिए इसे सभी सूत्रों के राजा के रूप में जाना जाता है।

इसका एक कारण यह है कि पुण्डरीक सूत्र सिखाता है कि इस संसार में सभी लोग बुद्ध के बच्चे हैं, और वे सभी बुद्ध बन सकते हैं।

बौद्ध धर्म में, प्राचीन काल से, केवल वे भिक्षु ही बुद्ध बन सकते थे जिन्होंने सामाजिक स्थिति को त्याग दिया, संसार को त्याग दिया और कठोर तपस्या की। पुण्डरीक सूत्र एकमात्र सूत्र है जो सिखाता है कि कोई भी, चाहे भिक्षु हो या आम बौद्ध, बुद्ध बन सकता है।

उदाहरण के लिए, क्या आपको कभी किसी मुसीबत में फंसे व्यक्ति की मदद करने का मन हुआ है या दूसरों के लिए कुछ अच्छा करने के बाद तरोताजा महसूस हुआ है? दूसरी ओर, अपने माता-पिता या मित्रों से झूठ बोलने के बाद आपको बुरा महसूस होता है।

☀ क्या तुम्हें पता था?

पुण्डरीक सूत्र- 3, के एक दृष्टांत में बुद्ध के शब्द, जो पढ़ते हैं: “ये सभी जीवित प्राणी मेरे बच्चे हैं।” इसका अर्थ है, इस लोक में सभी जीवित प्राणी बुद्ध की संतान हैं, इसलिए उन्हें समान रूप से देशनाओं की विवेचना करेंगे।



आकांक्षा से जीना: आपका प्रस्थान बिंदु
लोक में हर चीज़ बुद्ध की अभिव्यक्ति है
क्योंकि मैं तुम पर दृष्टि रख रहा हूँ

निक्क्यो निवानो
रिश्शो कोसेइ काइ का संस्थापक



पुण्डरीक सूत्र के एक अंश, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, इस प्रकार आगे बढ़ता है: “लेकिन अब यह त्रिविधलोक आपदा और परेशानी से भरा हुआ है, केवल मैं ही उन जीवित प्राणियों को बचाने, रक्षा करने में समर्थ हूँ।”

यह बुद्ध का हमें यह कहकर आश्चस्त करने का आश्वासन है कि “इस लोक में कई तरह की कठिनाइयाँ हैं, लेकिन तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं तुम सभी पर दृष्टि रख रहा हूँ।”

दुःखदर्द बुद्ध के ज्ञान और करुणा का अनुभव करने का एक अवसर हो सकता है। जब तक हम भद्रलोगों को यह अनुभव नहीं होता है कि, हमें जीवन का उपहार दिया गया है और बुद्ध ने हमारा पोषण किया है, तब तक हम अपनी इच्छाओं और स्वार्थ से प्रेरित होते हैं, और हमारी पीड़ा कभी कम नहीं होती है। यही कारण



जागृति के बीज अंकुरित करना

है, जब किसी पीड़ित व्यक्ति से मिलते हैं, बुद्ध मार्ग पर चलने वाले लोगों की भूमिका होनी चाहिये, उस व्यक्ति के साथ सौम्य दृष्टिकोण का उपयोग करके जुड़ना है, इस विश्वास के साथ कि उस व्यक्ति के लिए बुद्ध की शिक्षा का सामना करने का अवसर अभी भी पूरी तरह से परिपक्व नहीं हो सका है।

जब लोगों का सामना होता है, जो पीड़ा और संकट से जूझ रहे हैं, तो उन लोगों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि उन्हें जीवन का उपहार दिया गया है और बुद्ध ने उन्हें सहारा दिया है। संकटग्रस्त लोगों को साथ लेकर चलना चाहिये, जिससे उन्हें उन समस्याओं के माध्यम से बुद्ध की करुणा को पहचानने में मदद मिले। यदि आपने एक बार भी बुद्ध की शिक्षा की बहुमूल्यता का अनुभव किया है, तो आप ऐसी प्रत्येक मेलजोल में शिक्षा के प्रकाश में अपने हृदय की स्थिति पर विचार कर सकते हैं। और आप उस अनुभव को दूसरों की पीड़ा और संकट को हल करने में दयालुता के कार्य में लागू करना संभव होगा।

जिन लोगों ने व्यक्तिगत रूप से पीड़ा से मुक्ति का अनुभव किया है, वे दूसरों को साथ लेकर चल सकते हैं, ताकि वे बुद्ध की करुणा से अवगत हो सकें। और इस प्रयास के माध्यम से, जो लोग दूसरों को बुद्ध की करुणा का एहसास कराने में मदद करते हैं, वे अपने स्वयं के बुद्ध स्वभाव को और भी अधिक प्रकट करते हैं। जब हम प्रत्येक मेलजोल को अपने स्वयं के बुद्ध स्वभाव को प्रकाश में लाने के अवसर के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हम सीधे बोधिसत्त्व मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

किसी दूसरे के बुद्ध स्वभाव को प्रकट करना किसी भी समय और किसी भी प्रकार की बातचीत में किया जा सकता है। चाहे काम पर हों या आपके समुदाय में, महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन लोगों की वहाँ भूमिका है, उन्हें दूसरों के लाभ के लिए समर्पण की भावना से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें।

जब मैं सुबह ग्रेट सेक्रेड हॉल में पहुँचता हूँ, तो हॉल में सेवा करने वाले उस दिन के स्वयंसेवक हमेशा मेरा स्वागत करते हैं। उनमें से कभी-कभी किंडरगार्टन उम्र के छोटे बच्चे भी होते हैं। जब मैं उनके सिर पर हाथ फेरता हूँ और कहता हूँ, “आप आज स्वयंसेवा करने आये हैं! अच्छा काम करो!” वे बड़े सिर हिलाकर जवाब देते हैं और उनके चेहरे के भाव यह दिखाने के लिए बदल जाते हैं कि वे मदद करने के लिए उत्सुक हैं। मेरा मानना है कि इतनी बातचीत से भी प्रत्येक बच्चे के मन में यह जागरूकता आयेगी कि वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

बौद्ध धर्म में “दस हजार अच्छे कर्मों में से किसी एक के माध्यम से बुद्ध बनने” की अवधारणा है, और मुझे यकीन है कि कम उम्र से बुद्ध की भूमिका निभाने का अनुभव निश्चित रूप से लोगों को वयस्क होने पर दूसरों और संसार में लाभ के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।





शांति में शरीर वाणी मन के माध्यम का योग

रेवरेन्ट केइइची आकागावा
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

जापान अगस्त में गर्मी के मौसम के चरम में प्रवेश कर चुका है। इतिहास में परमाणु बमों का शिकार होने वाला एकमात्र देश होने के नाते, जापान हर वर्ष इस महीने के दौरान वार्षिक स्मारक संस्कार और शांति प्रार्थना समारोह मनाता है।

पश्चाताप और दुःख की भावनाएँ, और युद्ध में अपनी जान गंवाने वाले सभी लोगों को सांत्वना देने की लालसा, द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के 78 वर्ष बाद भी आज बरकरार है, और मेरा मानना है कि ये भावनाएँ हमेशा बनी रहेंगी।

इस वर्ष मई में जापान ने G7 हिरोशिमा शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। अलग-अलग समय पर, G7 सदस्य देशों के नेताओं, आमंत्रित देशों के प्रमुखों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों और विशेष अतिथि यूक्रेन के प्रेसिडेंट ज़ेलेन्स्की ने हिरोशिमा शांति स्मारक पार्क के भीतर स्थित परमाणु बम पीड़ितों के लिए स्मारक के सम्मान में अपने सिर झुकाए और हिरोशिमा शांति स्मारक संग्रहालय का दौरा किया। इन कार्यों की मीडिया कवरेज ने जापान में शांति की चाहत को तीव्र करने का काम किया।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि नहीं केवल राजनीतिक नेताओं, बल्कि हम जैसे आस्थावान लोगों के लिए भी युद्ध के पीड़ितों को सांत्वना देना और शांति की दिशा में काम करने के लिए कार्यवाई के साथ प्रतिज्ञा लेने का इससे अधिक महत्वपूर्ण समय कभी नहीं रहा, ताकि हम मानव सभ्यता के संघर्षों और युद्धों को खत्म कर सकें।

इस महीने, मैं सचेत रहकर अपने शरीर, वाणी और मन को एकीकृत करने के अभ्यास में संलग्न होना चाहता हूँ, जिसका लक्ष्य अपने दैनिक मेलजोल में सद्भाव का वातावरण बनाना है, साथ ही मैं अपने सभी साथियों को भी इन प्रयासों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ।

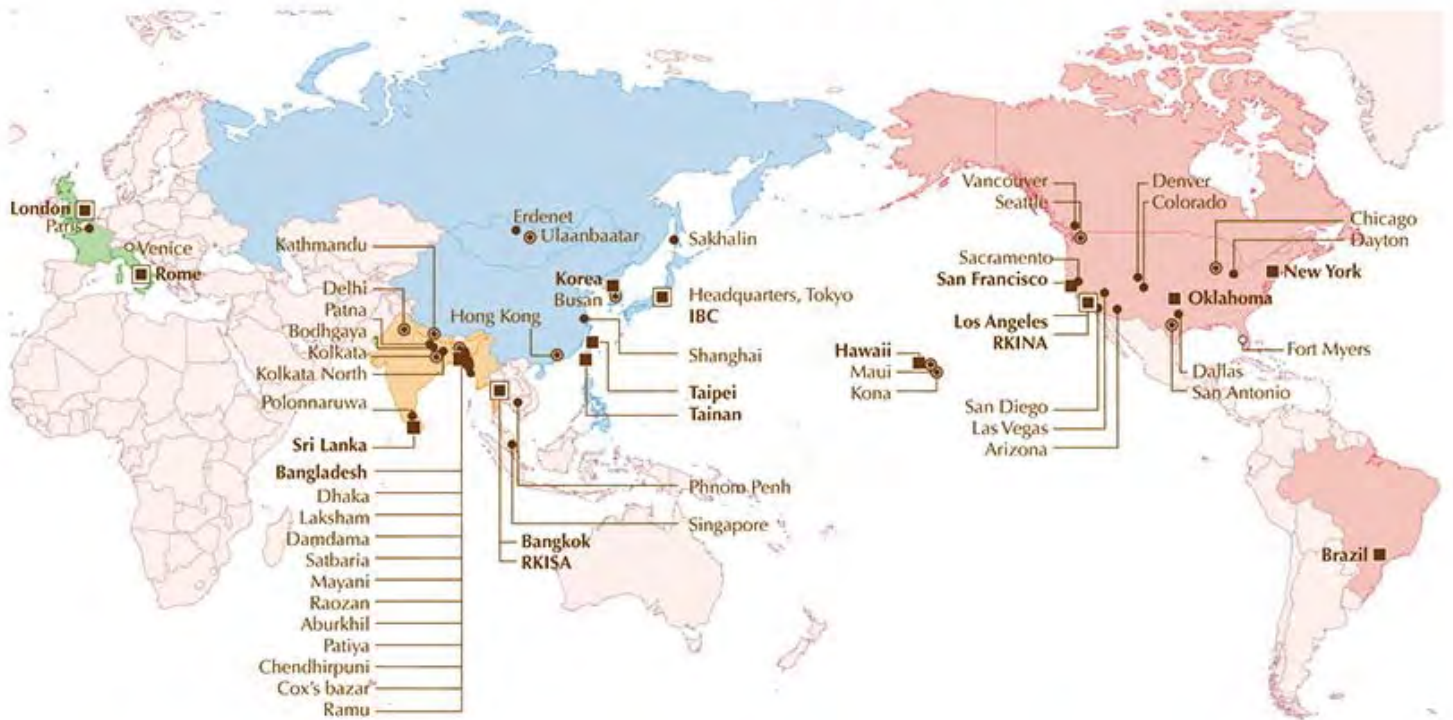


Rissho Kosei-kai International

Make Every Encounter Matter



🌸 A Global Buddhist Movement 🌸



Information about
local Dharma centers



facebook



twitter



✉ We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp